

# दि कार्मिक पोस्ट

Global  
School Of  
Excellence,  
Obedullaganj

वर्ष : 6, अंक : 41

(प्रति बुधवार), इन्दौर, 2 जून से 8 जून 2021

पेज : 8

कीमत : 3 रुपये

## भारत में विषाक्तता का प्रमुख कारण है कीटनाशक, उत्तर भारत है सर्वाधिक प्रभावित –अध्ययन...

नई दिल्ली। कीटनाशक भारत में विषाक्तता का प्रमुख कारण है। विषाक्तता के हर तीन में से दो मामलों में कीटनाशक ही जिम्मेदार होता है जो कि या तो जानबूझकर या अनजाने में उपभोग किया गया होता है। भारत में विभिन्न प्रकार के विषाक्तता के प्रसार पर एक नया शोध इस बात को उजागर करता है। जनवरी 2010 और मई 2020 के बीच किए गए 134 शोध अध्ययनों के विश्लेषण से यह पता चला कि कृषि और घरेलू गतिविधियों के लिए कीटनाशकों के व्यापक उपयोग के कारण 63 प्रतिशत के समग्र प्रसार के साथ कीटनाशक विषाक्तता का सबसे अहम कारण था।

इन सभी शोधों में 50,000 से अधिक प्रतिभागियों ने भागीदारी की थी। 24 मई, 2021 को ब्रिटिश मेडिकल जर्नल (बीएमजे) में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार वयस्क आबादी में कीटनाशक विषाक्तता का प्रसार 65 प्रतिशत और बच्चों में 22 प्रतिशत था। कीटनाशक के अलावा अन्य प्रकार के विषाक्तता में संक्षारक, विष, दवाएं और विविध एजेंट शामिल थे। विषाक्तता का दूसरा सबसे आम कारण विविध (मिसलेनियस) एजेंट थे, इसके बाद दवा, विष और संक्षारक थे। अध्ययन के अनुसार विषाक्तता प्रसार के क्षेत्रवार वितरण के विश्लेषण से पता चला कि यह उत्तर भारत में सबसे अधिक 79 प्रतिशत (विषाक्तता के कुल मामलों के तीन-चौथाई से अधिक) था। इसके बाद दक्षिण भारत (65.9 प्रतिशत), मध्य भारत (59.2 प्रतिशत) का स्थान था। वहीं, पश्चिम भारत (53.1 प्रतिशत), उत्तर पूर्व भारत (46.9 प्रतिशत) और पूर्वी भारत में 38.5 प्रतिशत विषाक्तता प्रसार पाया गया है। अध्ययन में यह भी कहा गया है कि कीटनाशकों की विषाक्तता का कारण गरीबी, खेती और कीटनाशकों की आसान उपलब्धता है। इस अध्ययन के बाद एक बार फिर देश में कीटनाशकों के बेरोकटोक उपयोग का मुद्दा सामने आया है क्योंकि यह कारण अब भी मानव स्वास्थ्य के लिए एक बड़ा खतरा बना हुआ है। खतरनाक कीटनाशकों के असुरक्षित उपयोग के कारण हर साल हजारों किसान और खेत मजदूर मर जाते हैं। पिछले



कुछ वर्षों में महाराष्ट्र, केरल, पंजाब, कर्नाटक और बिहार सहित अन्य राज्यों में कीटनाशकों के सेवन से किसानों और आम जनता की मौत ने कीटनाशकों के सीमित उपयोग किए जाने की जरूरत पर ध्यान केंद्रित किया है। रिपोर्ट के मुताबिक कीटनाशकों तक आसान पहुंच और इसकी खपत ने इसे दुनिया भर में आत्महत्याओं का प्रमुख कारण बना दिया है। शोध में कहा गया है + विश्व स्वास्थ्य संगठन और उसके सदस्य देशों ने कीटनाशकों की सुरक्षित पहुंच का एक कार्यक्रम शुरू किया था, जिसके परिणाम के तौर पर दुनिया भर में घातक विषाक्तता के प्रसार में 10 प्रतिशत की कमी आई है। हालांकि, भारत और दक्षिण पूर्व एशिया और चीन सहित दक्षिण एशियाई देशों में कीटनाशक विषाक्तता का प्रमुख कारण बना हुआ है। साथ ही यह भी बताया कि कई अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि कानूनी तंत्र या नीतिगत कार्रवाइयों द्वारा अत्यधिक घातक कीटनाशकों के सख्त प्रतिबंध से मौतों में बड़ी कमी आई है।

साभार - डाउन टू अर्थ

## जीन के द्वारा पशुओं में तुरंत रोगों का पता लगाया जा सकता है

नई दिल्ली। आनुवंशिक विकार से कृषि तथा दूध देने वाले जानवरों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। यह इन जानवरों के उत्पादन और इनको पालने के तरीकों पर असर डालते हैं। इन खतरों को कम करने का एक ऐसा तरीका है जो विभिन्न रोगों के लिए जिम्मेदार जीन के बारे में पता लगाता है।

एक बार आनुवंशिक विकार का संदेह होने पर किसान पशु चिकित्सक या प्रजनन कंपनियों को इसके बारे में जानकारी देते हैं। फिर शोधकर्ताओं जांच करने, उनकी पहचान करने के लिए चुनिंदा जानवरों के फेनोटाइप और जीनोटाइप पर जानकारी एकत्र करके इनके विकार के बारे में पता लगाते हैं। फेनोटाइप किसी भी जीव में देखने योग्य लक्षण हैं, जैसे कि ऊंचाई, आंखों का रंग और रक्त का प्रकार। फेनोटाइप में आनुवंशिक योगदान को जीनोटाइप कहा जाता है। मैसी विश्वविद्यालय और पशुधन सुधार निगम (एलआईसी) के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए एक नए अध्ययन ने अब इस प्रक्रिया को बदल दिया है। इसमें जीनोम अनुक्रम वेरिएंट के परिणामस्वरूप जानवरों के लक्षणों में होने वाले अंतर की लगातार जांच करने के लिए बढ़ते जीनोमिक अनुक्रम आंकड़ों की मदद ली जा सकती है। इन जानवरों की पहचान करने के बाद, आगे की जांच में उन प्रभावों पर प्रकाश डाला गया जिस पर अभी तक किसी का ध्यान नहीं गया था। प्रमुख अध्ययनकर्ता और मैसी के एल रे सेंटर ऑफ जेनेटिक्स एंड ब्रीडिंग में पीएच.डी. छात्र एडवर्ड रेनॉल्ड्स कहते हैं ये बहुत ही रोमांचक खोज है। यह इस बात का प्रमाण है कि हम नए आनुवंशिक विकारों को सक्रिय रूप से पहचान सकते हैं और दुनिया भर में खासकर न्यूजीलैंड के डेयरी पशुओं के स्वास्थ्य और



उत्पादकता को और बढ़ सकते हैं। एलआईसी में प्रमुख शोधकर्ता और मैसी के पशु आनुवंशिकी प्रोफेसर मैट लिटिलजॉन ने शोध की अगुवाई की है, वे कहते हैं हम अलग-अलग जीन और इनकी संख्या और बड़े पैमाने पर पढ़ने वाले प्रभावों से आश्चर्यचकित थे। रेनॉल्ड्स के सह-शोधकर्ता और एल रे सेंटर के मुख्य वैज्ञानिक प्रोफेसर डोरियन गैरिक कहते हैं, शोधकर्ता और उद्योग जगत के एक साथ काम करके जानवरों के स्वास्थ्य, उत्पादकता और उनकी अहमियत को बढ़ाया जा सकता है ताकि किसानों को इससे लाभ मिल सके। टीम ने जानवरों में हल्के, सीमित प्रभावों के साथ शरीर में होने वाले मामूली नुकसान से लेकर शरीर के वजन में लगभग 25 प्रतिशत की कमी और शुरुआती जीवन में मृत्यु दर में वृद्धि के प्रभावों के साथ छह बार-बार बदलने वाले वेरिएंट पाए। खोजों में पाया गया कि जानवरों के शरीर के वजन के प्रभावों से अलग, कम दूध उत्पादन, सबसे बड़े प्रभाव वाले वेरिएंट के लिए लगभग 1000 लीटर दूध प्रति स्तन ग्रंथि से दूध निकलने, उस दूध को बच्चे को पिलाने की प्रक्रिया में लगने वाले समय, कम गाढ़ा दूध सबसे बड़े प्रभाव वाले वेरिएंट के लिए प्रति स्तनपान 75 किग्रा कम था, जानवरों में छोटे कद सहित कई अन्य प्रभाव जैसे छत्ती की छोटी परिधि और अन्य शारीरिक परिवर्तनों की भी पहचान की गई। प्रोफेसर लिटिलजॉन का कहना है कि इन अलग-अलग प्रकार की जानकारी का उपयोग अब आनुवंशिक परीक्षण के माध्यम से वेरिएंट की आवृत्तियों को रोकने में मदद के लिए किया जा सकता है। यह अध्ययन नेचर जेनेटिक्स नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है।

साभार - डाउन टू अर्थ

# गर्मी के कारण होने वाली 37 फीसदी मौतों के लिए जिम्मेवार है तापमान में हो रही वृद्धि

1991 से 2018 के बीच दुनिया भर में गर्मी के कारण हुई करीब 37 फीसदी मौतों के लिए वैश्विक तापमान में हो रही वृद्धि जिम्मेवार थी। लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एंड ट्रॉपिकल मेडिसिन और बर्न विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं द्वारा किए गए अध्ययन में यह बात सामने आई है।

उन्होंने दुनिया भर के 43 देशों में 732 स्थानों के आंकड़ों का अध्ययन किया, जिन्हें महामारी और जलवायु मॉडलिंग के क्षेत्र की प्रमुख परियोजनाओं से लिया गया था। यह ऐसा पहला शोध है गर्मी के कारण बढ़ने वाली मृत्यु दर में जलवायु परिवर्तन की भूमिका को स्पष्ट करता है। इस शोध में 1991 से 2018 के बीच गर्मी के कारण होने वाली मौतों का अध्ययन किया गया है।

अंतरराष्ट्रीय जर्नल नेचर क्लाइमेट चेंज में छपे इस शोध में कहा गया है कि वैश्विक स्तर पर गर्मी के कारण होने वाली मौतों का आंकड़ा स्थान के आधार पर कहीं कम कहीं ज्यादा था, जोकि 20 से 76 फीसदी तक पाया गया था। शोध के अनुसार सबसे ज्यादा मौतें दक्षिण अमेरिका के इक्वाडोर और कोलंबिया में रिकॉर्ड की गई थी जहां जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी के चलते 76 फीसदी तक मौतें हुई थी वहीं दक्षिण-पूर्व एशिया में यह 48 से 61 फीसदी के बीच रही थी।

साथ ही दक्षिण-पश्चिम एशिया में ईरान और कुवैत, पूर्वी एशिया में फिलीपींस और थाईलैंड जैसे देशों में गर्मी के कारण होने वाली 50 फीसदी से ज्यादा मौतों के लिए तापमान में हो रही वृद्धि जिम्मेवार थी।

वहीं यदि कुछ प्रमुख शहरों से जुड़े आंकड़ों को देखें तो सैटियागो डी चिली में इसके चलते हर वर्ष 136 मौतें हुई थी, जोकि शहर में गर्मी के कारण होने वाली कुल मौतों का करीब 44.3 फीसदी है। एथेंस में 189 मौतें (26.1 फीसदी), रोम

में 172 (32 फीसदी), टोक्यो में 156 (35.6 फीसदी), मैड्रिड में 177 (31.9 फीसदी), बैर्काक में 146 (53.4 फीसदी), लंदन में 82 (33.6 फीसदी), न्यूयॉर्क में 141 (44.2 फीसदी) और हो ची मिन्ह सिटी में जलवायु परिवर्तन के चलते उत्पन्न हुई गर्मी की विषम परिस्थितियों से 137 मौतें हुई थी, जोकि औसतन हर वर्ष गर्मी से हुई कुल मौतों का करीब 48.5 फीसदी है।

**तापमान बढ़ने के साथ और बढ़ता जाएगा**

**गर्मी का कहर-** शोधकर्ताओं के अनुसार ऐसा नहीं है कि तापमान में हो रही इस वृद्धि का परिणाम केवल मृत्यु के रूप में ही सामने आ रहा है। बढ़ती गर्मी का असर स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर रहा है, इसके चलते हृदय और सांस सम्बन्धी बीमारियों का जोखिम और बढ़ जाता है जिसके कारण अस्पताल में भर्ती तक होना पड़ता है। यह समस्याएं आम तौर पर कहीं ज्यादा सामने आती हैं, जिसका असर स्वास्थ्य सम्बन्धी खर्च पर पड़ता है। इस विश्लेषण में पूरे विश्व को कवर नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए इसमें अफ्रीका और दक्षिण एशिया के बड़े हिस्सों को आंकड़ों की कमी के चलते शामिल नहीं किया गया है। हालांकि अफ्रीका और दक्षिण एशिया में इसके खतरे को नकारा नहीं जा सकता। दुनिया की करीब एक चौथाई आबादी दक्षिण एशिया में रहती है। जिसके लिए बढ़ता तापमान एक बड़ा खतरा है। इस क्षेत्र में पहले ही काफी ज्यादा गर्मी पड़ती है साथ ही मौसम नम रहता है। लोग गरीब हैं, इस वजह से एयर कंडीशन



उनकी पहुंच से बाहर है।

लोग घनी आबादी वाले क्षेत्रों में रहते हैं और करीब 60 फीसदी लोग कृषि कार्यों में लगे हुए हैं। ऐसे में उनका घर में रहकर तो गुजरा होगा नहीं उन्हें अपने परिवार का पेट भरने के लिए खुले में काम करना ही होगा, जो उनपर लू के जोखिम को और बढ़ा देता है। गौरतलब है 2015 में भारत और पाकिस्तान में लू के चलते करीब 3,500 लोगों की जान गई थी।

हाल ही में लू और जलवायु परिवर्तन के सम्बन्ध पर किए एक अन्य शोध से पता चला था कि भविष्य में तापमान में 2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि के साथ ही लोगों के इसकी चपेट में आने का जोखिम भी 2.7 गुना बढ़ जाएगा। ऐसे में भारत जैसे देश जो पहले ही तापमान बढ़ने का कहर झेल रहे हैं वहां लू का आना आम हो जाएगा इस शोध की प्रमुख शोधकर्ता एना एम विसेडो-कैब्रेरा के अनुसार जिस तरह से वैश्विक तापमान में वृद्धि हो रही है यदि उसे रोकने और

जलवायु अनुकूलन के लिए कुछ नहीं किया गया तो गर्मी से होने वाली मौतों का अनुपात समय के साथ बढ़ता जाएगा। अब तक वैश्विक तापमान में औसतन 1.2 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हो चुकी है। ऐसे में यदि उत्सर्जन इसी तरह अनियंत्रित तरीके से बढ़ता रहा तो भविष्य में इसका प्रभाव कहीं ज्यादा होगा।

जब सारी दुनिया में लोग बढ़ती गर्मी का शिकार बन रहे हैं, तो यह जरूरी हो जाता है कि तापमान में हो रही इस वृद्धि को रोकने के लिए बढ़ते उत्सर्जन पर लगाम लगाई जाए। साथ ही जलवायु में आ रहे बदलावों के चलते स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों को कम करने के लिए बेहतर नीतियां बनाई जाएं। इसके लिए जलवायु अनुकूलन और शमन सम्बन्धी रणनीतियों पर तत्काल ध्यान दिया जाना जरूरी है। जलवायु परिवर्तन एक ऐसे समस्या है जिसे हल करने के लिए समस्त विश्व को साथ मिलकर काम करना होगा।

सागर - आज ६ अर्थ

## नई संरचना तिब्बती पठार के पर्माफ्रोस्ट को गलने से बचा सकती है

किंघाई तिब्बत का पठार (क्यूटीपी), जिसकी औसत ऊंचाई 4000 मीटर से अधिक है। यह दुनिया के सबसे ऊंचे पठारों में से एक है और इसमें पृथ्वी पर सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित पर्माफ्रोस्ट का सबसे बड़ा क्षेत्र शामिल है। हाल के दशकों में, किंघाई तिब्बत के पठार (क्यूटीपी) पर जलवायु परिवर्तन की वजह से बढ़ते तापमान ने पर्माफ्रोस्ट की गर्मी को बढ़ा दिया है जिसके कारण पर्माफ्रोस्ट में गिरावट देखी जा रही है। लगातार बढ़ती गर्मी के चलते पर्माफ्रोस्ट की बुनियाद कमजोर पड़ गई है। पर्माफ्रोस्ट वह भूमि है जो लगातार दो या उससे अधिक वर्षों तक 0 डिग्री सेंटीग्रेड से नीचे रहती है, जो भूमि पर या समुद्र के नीचे स्थित होती है। जरूरी नहीं कि पर्माफ्रोस्ट जमीन पर पहली परत हो। यह पृथ्वी की सतह के नीचे एक इंच से लेकर कई मील की गहराई तक हो सकता है। टूटे हुए पत्थरों की दीवार (क्रश-रॉक रिबेटमेंट, सीआरआर) जिससे तटबंध को ढलानों पर पका किया जा सकता है। व्यापक रूप से जिसका उपयोग पर्माफ्रोस्ट को ठंडा और संरक्षित करने के लिए उपयोग किया जाता है। हालांकि, गर्म पर्माफ्रोस्ट पर पारंपरिक टूटे हुए पत्थरों की दीवार (सीआरआर) उन समस्याओं का सामना कर रही है जो इसके लंबे समय तक ठंडे होने की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। एडवॉंस इन मेटेरियल्स साइंस एंड इंजीनियरिंग में प्रकाशित एक अध्ययन में, चीनी विज्ञान अकादमी (सीएएस) के नॉर्थवेस्ट इंस्टीट्यूट ऑफ इको-एनवायरनमेंट एंड रिसोर्स (एनआईईआर) की एक शोध टीम ने पर्माफ्रोस्ट को ठंडा करने की क्षमता में सुधार के लिए एक नई संरचना (एनएमएस) तैयार की है, जो टूटे हुए पत्थरों की दीवार (सीआरआर) और चट्टान की कमजोर परत के छिद्रों का मुकाबला कर सकती है।



2004 से 2014 तक जमीन के तापमान की निगरानी के आधार पर, शोधकर्ताओं ने सबसे पहले एक गर्म पर्माफ्रोस्ट क्षेत्र में चयनित टूटे हुए पत्थरों की दीवार (सीआरआर) तटबंध के ठंडे होने वाली विशेषताओं की जांच की। फिर उन्होंने एक दूसरे से जुड़े हुए गर्मी को स्थानांतरण करने वाले मॉडल को विकसित किया। जलवायु परिवर्तन की वजह से बढ़ते तापमान को देखते हुए, इसे ठंडा करने के प्रभाव का मूल्यांकन करने और नई संरचना के प्रदर्शन को मजबूत करने के लिए संख्यात्मक सिमुलेशन की एक श्रृंखला बनाई गई। नई संरचना ढलानों पर चट्टान की परत को रेत भरने से बचा सकती है। एनएमएस का उपयोग गर्म पर्माफ्रोस्ट के रखरखाव के लिए एक प्रभावी विधि के रूप में किया जा सकता है। यह आशा की जाती है कि यह अध्ययन ठंडे क्षेत्रों में शीत ऊर्जा के उपयोग में सुधार कर सकता है और तटबंधों के गर्म या पिघलने संबंधी संवेदनशील पर्माफ्रोस्ट क्षेत्रों के डिजाइन और रखरखाव के लिए मार्गदर्शन दे सकती है।

सागर - आज ६ अर्थ

# मरुस्थल में बदल चुका है भारत का 30 फीसदी इलाका, 8 राज्यों में हालात बुरे

लखनऊ। आज पूरा विश्व मरुस्थलीकरण रोकथाम दिवस (डब्ल्यूडीसीडी) मना रहा है। इस दिन पूरे विश्व में जमीन के मरुस्थल होने पर चिंता जताई जा रही है। भारत में भी यह चिंता लगातार बढ़ रही है। इसकी वजह यह है कि भारत की करीब 30 फीसदी जमीन मरुस्थल में बदल चुकी है। इसमें से 82 प्रतिशत हिस्सा केवल आठ राज्यों राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, जम्मू एवं कश्मीर, कर्नाटक, झारखंड, ओडिशा, मध्य प्रदेश और तेलंगाना में है।

मरुस्थलीकरण एक तरह से भूमि क्षरण का वह प्रकार है, जब शुष्क भूमि क्षेत्र निरंतर बंजर होता है और नम भूमि भी कम हो जाती है। साथ ही साथ, वन्य जीव व वनस्पति भी खत्म होती जाती है। इसकी कई वजह होती हैं, इसमें जलवायु परिवर्तन और इंसानी गतिविधियां प्रमुख हैं। इसे रेगिस्तान भी कहा जाता है। सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरमेंट (सीएसई) द्वारा जारी स्टेट ऑफ एनवायरमेंट इन फिगर्स 2019 की रिपोर्ट के मुताबिक इतना ही नहीं, 2003-05 से 2011-13 के बीच भारत में मरुस्थलीकरण 18.7 लाख हेक्टेयर बढ़ चुका है। सूखा प्रभावित 78 में से 21 जिले ऐसे हैं, जिनका 50 फीसदी से अधिक क्षेत्र मरुस्थलीकरण में बदल चुका है। 2003-05 से 2011-13 के बीच नौ जिले में मरुस्थलीकरण 2 प्रतिशत से अधिक बढ़ा है। भारत 29.32 फीसदी क्षेत्र मरुस्थलीकरण से प्रभावित है। इसमें 0.56 फीसदी का बदलाव देखा गया है। गुजरात में चार जिले ऐसे हैं, जहां मरुस्थलीकरण का प्रभाव देखा जा रहा है। इसके अलावा महाराष्ट्र में 3 जिले, तमिलनाडु में 5 जिले, पंजाब में 2 जिले, हरियाणा में 2 जिले, राजस्थान में 4 जिले, मध्य प्रदेश में 4 जिले, गोवा में 1 जिला, कर्नाटक में 2 जिले, केरल में 2 जिले, जम्मू कश्मीर में 5 जिले हिमाचल प्रदेश में 3 जिलों में मरुस्थलीकरण का प्रभाव है। नक्शे में समझिए कि किन जिलों में मरुस्थल की क्या स्थिति है?



# श्वेत क्रांति की बदौलत भारत बना दुनिया का सबसे बड़ा दूध उत्पादक देश

विश्व दुग्ध दिवस क्यों मनाते हैं? सन 2001 से हर साल 1 जून को पूरी दुनिया में विश्व दुग्ध दिवस मनाया जा रहा है। डेयरी किसानों और डेयरी क्षेत्र की सराहना करने और दुनिया भर में भोजन के रूप में दूध के महत्व को पहचानने के लिए संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन द्वारा इस दिवस की स्थापना की गई थी। डेयरी क्षेत्र से भारत सहित दुनिया के अरबों लोगों की आजीविका जुड़ी हुई है। दूध के महत्व को एफएओ के आंकड़ों से समझा जा सकता है जो दिखाता है कि दुनिया भर में 1 अरब से अधिक लोगों की आजीविका डेयरी क्षेत्र से जुड़ी है। दुनिया भर में 6 अरब से अधिक लोगों द्वारा डेयरी उत्पादों का उपभोग किया जाता है। 1 जून को ही दुग्ध दिवस क्यों? खाद्य और कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार इस तिथि को इसलिए चुना गया क्योंकि कई देश इस समय या उसके आसपास पहले से ही राष्ट्रीय दुग्ध दिवस मना रहे थे। इसे मई के अंत में मूल रूप से प्रस्तावित किया गया था, लेकिन कुछ देशों, उदाहरण के लिए चीन ने महसूस किया कि उस महीने में उनके पास पहले से ही बहुत सारे उत्सव थे। जबकि अधिकांश देश 1 जून को अपने उत्सव मनाते हैं, कुछ लोग इस तिथि से एक या एक सप्ताह पहले या बाद में इसे आयोजित करते हैं।

2020 में, विश्व दुग्ध दिवस 40 से अधिक देशों द्वारा मनाया गया। इसमें दूध देने के प्रदर्शन और खेलों में दौरे किए गए, खेल, प्रतियोगिताएं और संगीत कार्यक्रम किए गए। दूध उत्पादों का वितरण, और सम्मेलन, सेमिनार और सूचनाओं को साझा किया गया। इन सभी का उद्देश्य दूध के मूल्य के बारे में जानकारी साझा करना और समुदायों, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं और समाजों के सांस्कृतिक पहलुओं में डेयरी क्षेत्र की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाना था। इन आयोजनों ने बच्चों, डेयरी किसानों, निर्माताओं, व्यापारियों, उपभोक्ताओं, वैज्ञानिकों और सरकारी अधिकारियों सहित इस क्षेत्र से जुड़े सभी लोगों को भाग लेने का एक और अवसर प्रदान किया।

**इस वर्ष की थीम-** विश्व दुग्ध दिवस 2021 थीम पर्यावरण, पोषण के साथ डेयरी क्षेत्र में स्थिरता पर केंद्रित है। वर्ल्ड मिल्क डे.ऑर्ग के अनुसार डेयरी के लिए कम कार्बन उत्सर्जन वाला भविष्य बनाने में मदद के लिए तकनीकों को अपनाने वाले किसानों और अन्य लोगों के सुझावों, वीडियो को प्रोत्साहित कर रहे हैं।

**विश्व दुग्ध दिवस पर कोविड-19 का प्रभाव-** वर्ल्ड मिल्क डे.ऑर्ग के अनुसार कोविड-19 की वैश्विक महामारी के कारण, आयोजकों को विश्व स्वास्थ्य संगठन और आपकी स्थानीय सरकार द्वारा निर्धारित नीतियों का पालन करने के लिए सोशल मीडिया अभियानों या ऑनलाइन कार्यक्रमों की मेजबानी करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हमारा समर्थन उन सभी लोगों के साथ है जो इस वायरस से प्रभावित हैं।



**भारत और विश्व दुग्ध दिवस-** भारत दुनिया में दूध के सबसे बड़े उत्पादकों में से एक है। 1955 में, भारत का मक्खन आयात प्रति वर्ष 500 टन था और 1975 तक दूध और दूध से बने उत्पादों के सभी आयात बंद कर दिए गए थे क्योंकि भारत दूध उत्पादन के मामले में आत्मनिर्भर हो गया था। दुग्ध उत्पादन में भारत की सफलता की कहानी डॉ वर्गीज कुरियन द्वारा लिखी गई थी, जिन्हें भारत में 'श्वेत क्रांति के जनक' के रूप में जाना जाता है। आज विश्व दुग्ध दिवस पर कई लोग डॉ वर्गीज कुरियन को याद कर रहे हैं। भारत में श्वेत क्रांति डॉ वर्गीज कुरियन के दिमाग की उपज थी। उन्हें भारत को दूध की कमी वाले देश से आज दुनिया में दूध का सबसे बड़ा उत्पादक देश बनाने के अपने जबरदस्त प्रयासों के लिए जाना जाता है। उनके अधीन गुजरात सहकारी दुग्ध विपणन संघ लिमिटेड और राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड जैसे कई महत्वपूर्ण संस्थान स्थापित किए गए। इन दोनों निकायों ने देश भर में डेयरी सहकारी आंदोलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सहकारी डेयरी का आनंद मॉडल प्रसिद्ध हुआ और पूरे देश में प्रचलित हुआ। 1998 में विश्व बैंक ने भारत में डेयरी विकास के प्रभाव पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की और इसमें अपने स्वयं के योगदान को देखा। ऑडिट से पता चला कि विश्व बैंक ने ऑपरेशन फ्लड में निवेश किए गए 200 करोड़ रुपये में से, भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर कुल रिटर्न 10 साल की अवधि में हर साल 24,000 करोड़ रुपये का था, जो कि किसी अन्य डेयरी कार्यक्रम से मेल नहीं खाता।

# प्रकृति और पुराणों का गुढ़ संबंध....



स्कंद पुराण में एक सुंदर श्लोक है

प्रतिशतअश्वत्थमेकम् पिचुमन्दमेकम्प्रतिशत  
प्रतिशतन्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चिणीकान्प्रतिशत

प्रतिशतकपित्थविल्वः 55मलकत्रयञ्चप्रतिशत प्रतिशतपञ्चाऽऽम्रमुखा नरकत्र पश्येत्।प्रतिशत

अश्वत्थः = पीपल ( 100प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

पिचुमन्दः = नीम ( 80प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

न्यग्रोधः = वटवृक्ष ( 80प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

चिञ्चिणी = इमली ( 80प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

कपित्थः = कवित ( 80प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

विल्वः = बेल ( 85प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

आमलकः = आवला ( 74प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

आम्रः = आम ( 70प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है)

( उमि = पौधा लगाना )

अर्थात् - जो कोई इन वृक्षों के पौधों का रोपण करेगा, उनकी देखभाल करेगा उसे नरक के दर्शन नहीं करना पड़ेंगे। इस सीख का अनुसरण न करने के कारण हमें आज इस परिस्थिति के स्वरूप में नरक के दर्शन हो रहे हैं। अभी भी कुछ बिगड़ा नहीं है, हम अभी भी अपनी गलती सुधार सकते हैं।

गुलमोहर, नीलगिरी- जैसे वृक्ष अपने देश के पर्यावरण के लिए घातक हैं। पश्चिमी देशों का अंधानुकरण कर हम ने अपना बड़ा नुकसान कर लिया है पीपल, बड़ और नीम जैसे वृक्ष रोपना बंद होने से सूखे की समस्या बढ़ रही है ये सारे वृक्ष वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाते है साथ ही धरती के तापनाम को भी कम करते है। हमने इन वृक्षों के पूजने की परंपरा को अन्धविश्वास मानकर फटाफट संस्कृति के चक्र में इन वृक्षों से दूरी बनाकर यूकेलिप्टस (नीलगिरी) के वृक्ष सड़क के दोनों ओर लगाने की शुरुआत की। यूकेलिप्टस झट से बढ़ते है लेकिन ये वृक्ष दलदली जमीन को सुखाने के लिए लगाए जाते हैं। इन वृक्षों से धरती का जलस्तर घट जाता है। विगत 40 वर्षों में नीलगिरी के वृक्षों को बहुतायात में लगा कर पर्यावरण की हानि की गई है।

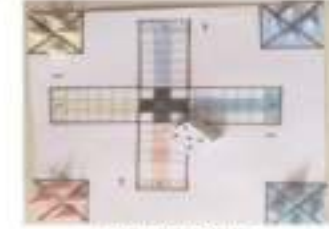
शास्त्रों में पीपल को वृक्षों का राजा कहा गया है

प्रतिशतमूले ब्रह्मा त्वचा विष्णु शाखा शंकरमेवच।प्रतिशत

प्रतिशतपत्रे पत्रे सर्वदेवायाम् वृक्ष राज्ञो नमोस्तुते।।प्रतिशत

भावार्थ-जिस वृक्ष की जड़ में ब्रह्मा जी तने पर श्री हरि विष्णु जी एवं शाखाओं पर देव आदि देव महादेव भगवान शंकर जी का निवास है और उस वृक्ष के पत्ते पत्ते पर सभी देवताओं का वास है ऐसे वृक्षों के राजा पीपल को नमस्कार है। आगामी वर्षों में प्रत्येक 500 मीटर के अंतर पर यदि एक एक पीपल, बड़, नीम आदि का वृक्षरोपण किया जाएगा, तभी अपना भारत देश प्रदूषणमुक्त होगा। घरों में तुलसी के पौधे लगाना होंगे। हम अपने संगठित प्रयासों से ही अपने भारत को नैसर्गिक आपदा से बचा सकते है।भविष्य में भरपूर मात्रा में नैसर्गिक ऑक्सीजन मिले इसके लिए आज से ही अभियान आरंभ करने की आवश्यकता है। आइए हम पीपल ,बड़, बेल ,नीम ,आंवला एवं आम आदि वृक्षों को लगाकर आने वाली पीढ़ी को प्रतिशतनिरोगी एवं +सुजला सुफला पर्यावरण+प्रतिशत देने का प्रयत्न करें।

## ग्लोबल स्कूल ऑफ एक्सीलेंस वर्चुअल समर कैंप गतिविधियां आरंभ



Name - Yashu Bager  
Class - 3rd



Name - Yashika Patel  
Class - 7th



Name - Shreyas Bager  
Class - 5th



Name - Shreyas Bager  
Class - 5th



Name - Siddhi Bager  
Class - 7th



Name - Yashika Bager  
Class - 7th



Name - Bishika  
Class - 9th



Name - Shreyas Bager  
Class - 5th



Name - Shreyas Bager  
Class - 5th



Name - Shreyas Bager  
Class - 5th



Name - Siddhi Bager  
Class - 7th



Name - Sravya Dubey  
Class - 8th



Name - Anshul Bager  
Class - 5th



Name - Anshul Bager  
Class - 5th



Name - Anshul Dubey  
Class - 8th

ग्लोबल स्कूल ऑफ एक्सीलेंस ने लीड स्कूल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने स्कूली बच्चों के लिए वर्चुअल समर कैंप गतिविधियां आरंभ की है। जिसका आरंभ 18 मई 2021 से हो चुका है। छह हफ्ते चलने वाले इस समर कैंप में बच्चे विभिन्न नवीन गतिविधियों के माध्यम से अपनी रचनात्मकता का विस्तार रुचिपूर्वक कर रहे हैं। इस समर कैंप में बच्चे साइंटिफिक एक्टिविटीज के साथ DIY क्राफ्ट, ओरिगेमी एवं पेंटिंग आदि रोचक कला सीख रहे हैं। कोविड-19 के कारण जहां विद्यालय बंद है फिर भी इस कठिन परिस्थिति में ग्लोबल स्कूल ऑफ एक्सीलेंस में बच्चों की शिक्षा वर्चुअल निरंतर जारी है और समर कैंप घर पर लर्निंग को और भी एक्साइटिंग बना रहा है।